Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 24-11-2021, Accepted: 05-12-2021, Published: 21-12-2021
Volume 2, Issue 2, 2021, Page No. 55-57

समकालिक विश्व के संदर्भ में गांधी दृष्टि

पवन कुमार तिवारी
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
आज वही राष्ट्र सबसे ज्यादा सम्पन्न और शक्तिशाली है जिसके यहाँ शत प्रतिशत नागरिक शिक्षित हैं आज वह राष्ट्र शक्तिशाली राष्ट्र की श्रेणी में खड़ा है शिक्षा ही व्यक्ति को इस बात का बोध कराती है कि कैसे हमें समाज के निम्न और निचले लोगों के साथ बर्ताव और व्यवहार करना है और उन्हें भी समाज की मुख्य धारा से जोड़ना हैए गाँधी जी ने कहा था कि हमें समाज व राष्ट्र के सामाजिक गुणों व जनसामान्य के नैतिक मूल्यों को उच्च स्तर पर ले जाने के लिए सत्य का अनुकरण करना पड़ेगा क्योंकि सत्य हमारी एक ऐसी धरोहर है जो कि हमें किसी भी परिस्थिति में एक साथ रहने के लिए प्रेरित करती है और किसी भी विपरीत स्थिति में लड़ने के लिए साहस और धैर्य प्रदान करती है इसलिए जनमानस को सदैव इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सत्य उसके जीवन की एक बहुमूल्य पूँजी है।

मूल शब्दः मूलभूत अधिकार, नैतिक मूल्य, मानव सभ्यता, संस्कृति, उदारवादी

प्रस्तावना

आज वही राष्ट्र सबसे ज्यादा सम्पन्न और शक्तिशाली है जिसके यहाँ शत प्रतिशत नागरिक शिक्षित हैं आज वह राष्ट्र शक्तिशाली राष्ट्र की श्रेणी में खड़ा है शिक्षा ही व्यक्ति को इस बात का बोध कराती है कि कैसे हमें समाज के निम्न और निचले लोगों के साथ बर्ताव और व्यवहार करना है और उन्हें भी समाज की मुख्य धारा से जोड़ना है, इन्हीं तमाम असमानताओं और विषमताओं को देखते हुए सरकार ने 6 वर्ष से लेकर 14 वर्ष तक के बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का संकल्प लिया है और शिक्षा लेने के अधिकार को मनुष्य के मौलिक अधिकारों के रूप में परिवर्तित कर दिया। अब यह मानव जाति के लिए उसका मूलभूत अधिकार हो गया जिसे प्रदान कराना सरकार का दायित्व है और इस कानून का असर हिन्दुस्तान की जनता के बीच दिख रहा है आज जनमानस अपने अधिकारों के लिए जागरूक है और उसे कोई भी किसी भी तरह की भ्रान्तियों में उलझा नहीं सकता है यह एक विकसित राष्ट्र बनने का पहला कदम है जो शिक्षा के माध्यम से पूर्ण होगा।[1]

यह गाँधी जी द्वारा बताए गये विचारों का ही परिणाम है आज समाज शिक्षा के महत्व और उसके मूल्य को समझ रहा है और अपने बच्चों को शिक्षा के लिए प्रेरित कर रहा है गाँधी जी ने इस पर कठोर प्रहार किया था कि यदि हमारे अपने संसाधनों और नीतियों के कारण समाज में शिक्षा का प्रसार और प्रचार नहीं हो रहा है तो इसमें जनमानस का क्या दोष है इसके चलते हम उन्हें मूर्ख नहीं समझ सकते एक किसान अपनी खेती को बहुत ही बुद्धिमत्तापूर्वक करता है और उससे फसल पैदा करता है और अपना जीवन यापन करता है इसका तात्पर्य है कि उस किसान के अन्दर सोच है बस उसे शिक्षा के माध्यम से निखारने की जरूरत है।[2]

गाँधी जी का कहना था कि शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति उपयोगी, अनुपयोगी, उचित–अनुचित, लाभ–हानि, सही–गलत आदि के बारे में स्पष्ट रूप से समझ सकता है जिससे उसे किसी भी प्रकार से बहकाया या दिग्भ्रमित नहीं किया जा सकता है शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपनी दरिद्रता व गरीबी को दूर कर सकता है आज सरकार ने शिक्षा को संविधान का एक महत्वपूर्ण अंग बना दिया है जरूरत हमें केवल इसे अंगीकार करने से है जिससे हम और हमारा समाज पूर्ण रूपेण विकसित हो सके।

सामाजिक विचारों और समाज के बारे में बताते हुए गॉधी जी ने इस बात पर जोर दिया है कि व्यक्ति के नैतिक मूल्य और उसके अपने जीवन के कुछ सिद्धान्त उसकी अपनी अमूल्य धरोहर होती है उन्होंने इस बात पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि यदि व्यक्ति ने अपने जीवन में नैतिक मूल्यों का अनावरण नहीं किया और वह उनकी रक्षा करने में विफल रहा है तो उसका जीवन एक ऐसी नौका के समान हो जाता है जो कि बिना नाविक के इधर–उधर गोते खाती रहती है और ऐसे व्यक्ति जिनका कोई लक्ष्य नहीं होता है जिनके अपने कोई जीवन के मूल्य नहीं है वह भला समाज के विकास में क्या योगदान करेंगे।

गाँधी जी के अनुसार हमारे सदाचार ही हमारे नैतिक मूल्य हैं जो कि हमें सामाजिक प्राणी की श्रेणी में लाकर खड़ा करते हैं अतएव हमें इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए कि भूलवश भी हमें कोई ऐसा कार्य नही करना चाहिए जिससे कि किसी को पीड़ा पहुँचे हमें सदैव व्यक्ति एवं समाज कल्याण की भावना को मन में रखकर और अपने कार्य को इसी निमित्त करना चाहिए और समाज में किसी भी तरह की बुराइयों का आगे बढ़कर विरोध करना चाहिए लेकिन हमारा विरोध अहिंसात्मक तरीके से होना चाहिए उसमें कहीं भी किसी भी स्तर पर हिंसा का प्रयोग नहीं होना चाहिए तब जाकर हम वास्तव में एक स्वच्छ समाज की कल्पना का स्वप्न देख उसे साकार कर सकते हैं।[3]

गाँधी जी ने इस बात पर जोर डालते हुए कहा था कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वार्थपरता की परछाई से दूर रहने की कोशिश करनी चाहिए जिससे कि समाज भी अपने आप को इन बुराइयों से दूर रख सके गॉधी जी ने कहा कि अर्थ मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है और मनुष्य इसको प्राप्त करने के लिए मेहनत करता है इसमें किसी भी तरह की कोई बुराई नहीं है क्योंकि आवश्यकताओं की पूर्ति करना मनुष्य का कर्तव्य है परन्तु जरूरत इस बात की है कि साध्य और साधन दोनों पवित्र होने चाहिए।

आप जिस निमित्त अर्थ को प्राप्त कर रहे हैं और उसे प्राप्त करन में जिन माध्यमों का उपयोग कर रहे हैं दोनों ही स्वच्छ और पवित्र होने

चाहिए आप उतना ही अर्थ संचय करे जितने की आपको आवश्यकता हो शेष अर्थ समाज कल्याण के निमित्त उपयोग में लाना चाहिए जिससे समाज का विकास होगा।

महात्मा गाँधी ने सदैव जनमानस को सत्य के मार्ग पर चलने की शिक्षा प्रदान की है और इस बात पर जोर डाला है कि मनुष्य को सदैव सत्य का साथ देना चाहिए और विपरीत से विपरीत परिस्थिति में भी सत्य का साथ नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि सत्य ही एक ऐसी पूँजी है जो व्यक्ति के मनोबल को बढ़ाती है तथा उसके अन्दर दृढ़ निश्चय प्रदान करती है और मनुष्य के अन्त तक उसके साथ रहती है इसी बात पर जोर डालते हुए कहा कि बिना सांस के तो मैं जिन्दा रह सकता हूँ परन्तु बिना सत्य के मेरा जीना सम्भव नहीं है और गॉधी जी ने अपने पूरे जीवन काल में इस सिद्धान्त को पूर्णरूपेण आत्मसात किया और मरते दम तक उन्होंने सत्य का साथ नहीं छोड़ा। सत्य की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि सच्चाई व्यक्ति के आत्म विश्वास को और मजबूत करती है उसके संघर्ष करने की क्षमता को बढ़ाती है उसके व्यक्तित्व के विकास को बढ़ाती है और इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात समाज में सिर ऊँचा करके चलने का मौका प्रदान करती है सत्य मानव जीवन का एक ऐसा दर्पण है जिसमें व्यक्ति अपने आपको सम्पूर्णतया निहार सकता है और अपना स्वमूल्यांकन कर सकता है गॉधीजी ने गीता के उपदेश का उल्लेख करते हुए लिखा है सत्य की राह कठिन जरूर है परन्तु असम्भव नहीं। इसमें कठिनाइयाँ जरूर आयेंगी लेकिन विराम नहीं। स्वतंत्रता के लम्बे संघर्ष में गॉधी जी को सत्य के कारण बड़ी सी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। कई रातें जेलों में काटनी पड़ी हैं लेकिन अन्ततोगत्वा पुनः वह और मजबूती से उठ खड़े हुए और उठकर वह अपने लक्ष्य में विजय प्राप्त करने में सफल रहे हैं इन्हीं बातों का उल्लेख करते हुए गाँधी जी ने कहा था कि मैंने अपनी वकालत केवल इसलिए छोड़ने का फैसला किया था क्योंकि इस व्यवसाय में अपने कर्तव्यों का पालन करने में कभी–कभी झूठ का सहरा लेना पड़ता था इसलिए मैंने अपने कर्तव्यपालन की अपेक्षा सत्य को मजबूती से पकड़ा और आज भी मेरा सत्य मेरे साथ तत्परता से खड़ा है और इसी सत्य ने मुझे अपने राष्ट्र व समाज की सेवा करने का सौभाग्य प्रदान किया है।[4]

इन्हीं बातों पर जोर देते हुए गाँधी जी ने कहा था कि हमें समाज व राष्ट्र के सामाजिक गुणों व जनसामान्य के नैतिक मूल्यों को उच्च स्तर पर ले जाने के लिए सत्य का अनुकरण करना पड़ेगा क्योंकि सत्य हमारी एक ऐसी धरोहर है जो कि हमें किसी भी परिस्थिति में एक साथ रहने के लिए प्रेरित करती है और किसी भी विपरीत स्थिति में लड़ने के लिए साहस और धैर्य प्रदान करती है इसलिए जनमानस को सदैव इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सत्य उसके जीवन की एक बहुमूल्य पूँजी है। महात्मा गाँधी ने सत्य के साथ–साथ मनुष्य को संस्कृति के अनावरण को भी एक महत्वपूर्ण साधन माना है जो कि समाज के विकास के लिए बहुत ही आवश्यक है गाँधी जी इस बात पर विचार करते हुए बताया कि संस्कृति राष्ट्र की एक ऐसी धरोहर होती है जो कि पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानान्तरित होती है जिसमें कई ऐसी महत्वपूर्ण नियम और परम्परायें होती हैं जो हमें जीवन के कठिन संघर्ष में सहायता प्रदान करती हैं और अच्छा नागरिक बनने में मदद करती है संस्कृति हमारी सभ्यता का प्रतीक होती है जो हमें एक साथ रहने का भाव सिखाती है और आपस में भाईचारा की भावना का विकास करती है गाँधी जी का कहना था कि हमारा राष्ट्र आज भी संस्कृति के माध्यम से ही विश्व के समक्ष मजबूती से खड़ा है। और आज भी अपनी पहचान संस्कृति के माध्यम से बनाये हुए है।[5]

संस्कृति की विस्तार से व्याख्या करते हुए गाँधी जी ने बताया कि संस्कृति मानव सभ्यता का प्रतीक है हमारा रहन–सहन, खान–पान, हमारी सामाजिक स्थिति हमारी संस्कृति का परिणाम है जो कि समाज के गठन उनके नागरिकों के रहन–सहन में स्पष्ट परिलक्षित होती है इस पर जोर डालते हुए गाँधी जी ने कहा कि मैंने कई वर्षों तक विदेश में प्रवास किया लेकिन मैंने सदैव इस बात का प्रयास किया है कि मेरी संस्कृति ही मेरी पहचान के रूप में प्रस्तुत हो और इसे मैंने अपनी एक अमूल्य धरोहर के रूप में संजोकर रखा जिसने मुझे कभी भी कमजोर नहीं होने दी और मेरी राष्ट्र भावना को सदैव जीवत बनाये रखा इस पर अपने विचार रखते हुए गाँधी जी ने कहा कि जिस राष्ट्र ने अपनी संस्कृति के मूल्य को नहीं समझा और उनके नागरिकों ने संस्कृति को समुचित महत्व प्रदान नही किया वह राष्ट्र की कमजोरी का कारण साबित हुआ है क्योंकि संस्कृति एकता व भाव का प्रतीक होती है जो लोगो को एक डोर में बांधे रहती है इसलिए हमें सदैव संस्कृति के महत्व को समझना चाहिए।[7]

महात्मा गॉधी ने जिस प्रकार का अनुसमर्थन सभ्यता एवं संस्कृति की अक्षुण्णता तथा उसके वरण के सन्दर्भ में की है उतनी ही महत्ता उन्होंने धर्म को प्रदान की है उन्होंने धर्म और संस्कृति को एक दूसरे के पूरक बताया है स्वामी विवेकानन्द के सदृश्य महात्मा गाँधी ने धर्म को राष्ट्र का प्राण बताया है महात्मा गाँधी के अनुसार धर्म हमें अच्छाई पर चलने तथा बुराई से दूर रहने की अभिप्रेरणा देता है धर्म की उदात्त तथा उदारवादी मनोभावना पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर सत्य के सन्निकट पहुँचने में अपना विशिष्ट योग देता है। गाँधी का जीवन में धर्म की महत्ता का अंकन इस आधार पर करना समीचीन होगा कि गाँधी की दिनचर्या का आरम्भ ही प्रार्थना से होती थी परन्तु महात्मा गाँधी का धर्म संकीर्ण तथा पूर्वाग्रही नहीं है अपितु वह 'सियाराम मय सब जगजानी' की अवधारणा पर अवलम्बित था उन्होंने कभी भी धर्म को समाज के ऊपर थोपने की कोशिश नहीं की और न ही धर्म की आड़ में वाह्य आडम्बरों को प्रसारित होने दिया। उन्होंने बताया कि धर्म मनुष्य की आन्तरिक इच्छा व भाव का प्रतिफल है जिसे जबरदस्ती थोपा नहीं जा सकता है। 6

महात्मा गाँधी ने समाज के कल्याण व पुररुत्थान में धर्म की भूमिका को भी एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करते हुए उसकी व्याख्या की है उनके अनुसार मानव कल्याण और समाज के विकास में धर्म ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है लेकिन उन्होंने धर्म में आडम्बर का जोरदार खण्डन किया है गाँधी जी ने बताया कि धर्म का पालन करना प्रत्येक व्यक्ति का अपना निर्णय है समाज के द्वारा या किसी शासक और शासन सत्ता द्वारा व्यक्ति पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं बनाया जा सकता है धर्म का पालन करना व्यक्ति की अपनी स्वतंत्र इच्छा है कभी भी धर्म का उपयोग समुदायों को आपस में विभाजित करने के लिए नहीं करना चाहिए और न ही इसे अशिक्षित और अबोध जनता की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना चाहिए। धर्म हमारी मानव सभ्यता का एक ऐसा प्रतीक है जो कि हमें सदाचार , मित्रता, प्रेमभाव और एकता का पाठ पढ़ाता है धर्म के नाम पर जो लोग समाज में विकृतियाँ फैला रहे हैं वह वास्तव में धर्म की परिभाषा को न तो जानते हैं और न ही उसके महत्व को पहचानते हैं और धर्म की आड़ में समाज को आपस में बॉटते हैं गाँधी जी ने व्यक्ति को कर्मवादी बताया है और अपेक्षा की है कि व्यक्ति को सदैव कर्म पर ध्यान देना चाहिए।[7]

सन्दर्भ सूची

1. भारतीय संस्कृति और परिवर्तन की चुनौतियाँ प्रो. श्यामाचरण दुबे, म. प्र. सामाजिक विज्ञान शोध संस्थान उज्जैन।
2. भारत में स्त्री अस्मिता का प्रश्न, सुभाषिनी अली सहगल, सम्पादकीय पृ. 25 दिसम्बर 2012
3. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध पुष्पेश पंत श्रीपाल जैन, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ
4. भारत स्वाभिमान, व्यवस्था परिवर्तन और स्वामी रामदेव– डा0 अखिलेश त्रिपाठी युवराज फीचर सर्विस जी–75 लाजपत नगर, नई दिल्ली।
5. भारतीय राजनीति में मूल्यों का संकट, डा0 अखिलेख त्रिपाठी, वीर प्रताप जालंधर समाचार पत्र रविवार 6 सितम्बर, 2009

6. संसदीय लोकतंत्र के मूल्यों का अवमूल्यन हृदय नारायण दीक्षित दैनिक जागरण, सम्पादकीय पृष्ठ दिनाँक 22 मई, 2011
7. भारत मे केन्द्र राज्य सम्बन्ध राम अवतार शर्मा, सुषमा यादव हिन्दी माध्यम क्रियान्वयन निदेशालय नई दिल्ली,